यमुना सत्याग्रह यात्रा

दिनांकः 26 जून 2007 से 1 जुलाई 2007

यमुना में प्रकृति प्रदत्त पानी सबके प्राण हैं। राज–समाज और सृष्टि सब का इस पर समान हक है। जीवन का आधार जल किसी एक व्यक्ति और किसी एक कम्पनी की बपौती नहीं है। सब के जीवन **'जल'** को किसी भी कम्पनी के हाथ देना या प्रदूषित करना राष्ट्रहित में नहीं है। जल जीवन के लिए **'सत्य'** है। जल बिरादरी अपनी सरकार से इस **'सत्य को स्वीकारने का आग्रह'** कर रही है। हम सब यमुना जल बिरादरी से जुड़े हुए हैं, इसलिए जल को स्वयं समझकर, दूसरों को भी समझाते हुए और स्वयं जल सहेजते शुद्ध करने हेतु दिनांक 26 जून से 1 जुलाई 2007 तक **'सत्य'** को मनवाने का **'आग्रह'** पूरे समाज के सामने रखने हेतु दिल्ली से आगरा व उत्तराकाशी तक सभी राज्यों सरकारों से यमुना को शुद्ध सदानीरा बनाने हेतु **'सत्याग्रह यात्रा'** निकाली गई।

यमुना सत्याग्रहियों का एक दल जो यमुना को शुद्ध–सदानीरा बनाने का आग्रह समाज और सरकार से करने हेतु राजेन्द्र सिंह–अध्यक्ष, जलबिरादरी, रमेश शर्मा–गांधी शान्ति प्रतिष्ठान, दिल्ली, विनोद, ललित शर्मा–उत्तर प्रदेश, प्रभुलाल सालवी और सलीम–राजस्थान के दिल्ली से निकले।

दिनांकः 26 जून 2007 **स्थानः चांदपुरा, फरीदाबाद, वल्लभगढ़, छांयसा, मथुरा**

दिनांक 26 जून 2007 को सत्याग्रहियों का दल दिल्ली से **चांदपुरा गांव** पहुंचा। वहां ग्रामीणों के साथ सभी यमुना के किनारे गये। जहां पर जल बिरादरी के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र सिंह ने वहां की प्रदूषित नदी का अवलोकन किया। उपस्थित ग्रामिणों ने यमुना की इस हालात को देखते हुये बताया कि पहले यह नदी साफ सुथरी थी। लेकिन अब यह दिल्ली के नाले को ढोती है। इसके बाद में श्री राजेन्द्र सिंह ने कहा कि इस नदी को तो आप ही बचा सकते है। क्योंकि इस नदी में आपने अपना जीवन जीया है। आपने तो फिर भी इस नदी को देखा है। लेकिन जरा यह सोचे कि क्या आपके बच्चें इसे देख पायेगे। अतः मेरी आप लोगों से विनती है, कि आप ऐसा संगठन बनाये जो यमुना को प्रदूषित करने वालों के खिलाफ काम करें।

इसके पश्चात् चांदपुरा गांव में ग्रामिणों के साथ बैठक रखी गई जिसमें रमेश भाई ने 'यमुना गीत' से बैठक का शुभारम्भ किया, तथा उन्होंने ग्रामिणों को यमुना नदी की हाली स्थिति से अवगत कराया, कि जिस नदी में आपकी संस्कृति व सभ्यता छुपी हुई थी। वह आज क्या है। इससे आप स्वयं परिचित है। अतः आप लोगों को आगे आकर एक मोर्चा निकालना होगा। अतः आप ही कामन वैल्थ गेम की जगह को बनने से रोक सकते है।

ग्रामिणों ने निम्न व्यक्तियों के नाम सत्याग्रहियों को बताये, जो यमुना को बचाने को लेकर कार्य करेंगे तथा लोगो को जागरूक करने का कार्य करेगें :

1. नूरी पुत्र श्री रमजान
2. मोहम्मद शहीद पुत्र श्री अली खां
3. नूरी ईलाही पुत्र श्री भूरा जी
4. शेरदिन पुत्र श्री मेजर खान
5. हुसनी पुत्र श्री चन्दा जी पंचयात सदस्य
6. खुरसीद पुत्र श्री मुस्सदीन
7. महावीर पुत्र सम्मन जी

मिटींग के पश्चात् सत्याग्रहियों का दल **मैगा पाई होटल फरीदाबाद** गया। जहां फरीदाबाद के बुद्धिजीवी लोग, पत्रकार व सरकारी कर्मचारी उपस्थित थे। उनके सम्बोधित करते हुये श्री सिंह ने कहा कि प्राकृतिक संसाधन के शब्दकोष से लगातार शब्द कम होते जा रहे हैं। पहले जमीन, फिर जंगल, जानवर और पानी। बीसवीं सदी में पानी व्यापार की चपेट में आ गया है। व्यावसायिक घराने अपने निर्वहन के लिए पानी को एक 'उपभोक्ता वस्तु' के रूप में देख–समझ रहे हैं। उन्हें मालूम है, कि पानी के जितने हिस्से पर उनका नियंत्रण होगा उनकी व्यावसायिक उम्र उतनी ही लंबी होगी। मीठे पानी के प्रमुख स्रोतों पर खरीद बिक्री के प्रयास अब छुपे हुए रहस्य नहीं है। हमें यह समझना होगा कि जैसे–जैसे जल संसाधनों पर नियंत्राण बढ़ेगा, पानी का संकट गहराता चला जाएगा। जल दोहन की वस्तु नहीं है। जल संरक्षण और उपयोग का शास्वत चक्र है। यह चक्र हमारे जीवन क्रम को चलाता आ रहा है। हमारे पुरखों ने हमें जो समझ दी है वह कभी जल को भोग्य वस्तु नहीं बनाती। इस समझ में कमी आ गई जिसके कारण आज हम जल–संकट जैसे नये–नवेले शब्दों को अपनी शब्दावली में डाल रहे हैं।

एक बड़ी समस्या यह हो गयी है कि अब जल संरक्षण को भी हमने सरकार का काम मान लिया है। हम अपने उपभोग लायक अन्न पैदा कर सकते है, तो जल संरक्षण क्यों नही कर सकते? हमारी समझ में आयी इस खोट का ही नतीजा है, कि सरकार अपने हिसाब से जल संरक्षण कर रही है और उस संरक्षित जल पर उद्योगों को प्राथमिकता दे रही है, और पानी तथा हमारे बीच में तरह–तरह के व्यवधान पैदा कर रही है। पानी और हमारे बीच फासला लगातार बढता गया है। सरकार की सक्रियता का परिणाम यह हुआ है, कि पानी मंत्रालयों, विभागों, दफ्तरों, फाईलों का विषय बन गया है। और जहां भी ये तत्व शामिल होंगे वहां भ्रष्टाचार, लूट–पाट और मनमानी आना बहुत स्वाभाविक होगा। बाढ़–सुखाड़ अपनी जगह, पानी की समस्या अपनी जगह और सरकारी इंतजाम अपनी जगह। हम सभी दावे–प्रतिदावों में व्यस्त है। पानी पर अपने समाज के एक बड़े हिस्से ने अपना हक छोड़ दिया है। हमारे जीवन में बहने वाला पानी सरकार द्वारा बनाई गयी नालियों और नहरों में पहुंच गया हैं। इसी का परिणाम है, कि गंदे नालों की संख्या बेतहाशा बढ़ी है। इस सच्चाई से कौन इंकार करेगा कि अपशिष्ट पदार्थ नाले में बाद में पहुंचते है, पहले वे हमारे हाथ से गुजरते हैं। पानी के प्रति हमारा यह गैर–जिम्मेदाराना रवैया सबको भारी पड़ेगा। पानी को हम उपभोग की वस्तु समझेंगे तो हमें असमय काल–कलवित होने से कोई नही बचा सकता।

दिल्ली के भूभाग पर हृदय धमनियों की तरह बहनेवाली मां यमुना के साथ हमने कृतघ्नता का व्यवहार किया है। हमने यमुना को अपने चित से उतार दिया है। इसी का परिणाम है कि अब सरकारें योजनाबद्ध तरीके से उसे समाप्त कर देने के काम में जुट गई हैं। पहले ही हमारी गंदगी के भार से बोझिल यमुना का अस्तित्व मिटा देने का आखिरी प्रहार सरकार द्वारा होने ही वाला है। वह है, कि इसके किनारों पर 10 हजार हैक्टेयर जमीन पर कंक्रीट का जंगल खड़ा कर दिया जाए।

अरबो खरबों का व्यापार हो जाएगा और सरकार के खजाने मे भी इतना पैसा आ जाएगा कि वह कुछ और फ्लाई–ओवरों को खड़ा कर विज्ञापन छपवा देगी। लेकिन इस व्यापार में यमुना ही नहीं खत्म होगी। खत्म हो जाएगी हमारी वह समझ जो अपनी नदियों से मां का रिस्ता रखती हैं। खत्म हो जाएगी वह भारतीयता का बोध जो तमाम संकटो में भी हमें अडिग रखती है।

यमुना के इस व्यवसायीकरण में हम यह भी भूल गये हैं कि एक बार के मुनाफे के लिए हम क्या–क्या गंवाने जा रहे हैं। हम यह भी भूल गये हैं कि बाढ़ और भूकंप दोनों प्राकृतिक क्रियाएं हैं और इंजिनियरिंग की कोई भी तकनीक इनका तोड़ नहीं दे सकतीं। यमुना के थाले में बनी तमाम संरचनाएं सिर्फ एक बाढ़ या भूकंप से धरती में समा सकती हैं। अगर हम अभी सचेत न हुए तो आनेवाली पीढ़ी

सेटेलाईट चित्रों से यमुना को खोजेगी और पश्चाताप करेगी कि हमारे पूर्वज कैसे गैर–जिम्मेदार थे कि जीती– जागती नदी को उन्होने मर जाने दिया?

हम लोगो जैसे लोगों को आकर इस समस्या से निपटना होगा यह नदी कहीं हमारें इतिहास में नहीं चली जाये इसके लिए हमें इसे बचाने के लिए सत्याग्रह करना होगा।

उन्होंने बताया कि यमुना सत्याग्रह अभियान के तहत 15 से 20 फरवरी को उन्होंने पहली सत्याग्रह यात्रा यमनोत्री से हथनीकुंड तक, दूसरी 19 से 28 मई तक हथनीकुंड़ से यूपी के रास्ते दिल्ली से हथनीकुंड़ तक की। 25 से 30 जून तक यह यात्रा दिल्ली से आगरा तथा वहां से उत्तराकांशी तक की जायेगी।

श्री रमेश भाई ने यमुना गीत 'नदियां धीरे बहो से' सभी को यमुना को बचाने के लिए प्रेरित किया।

श्रीमति रेखा चौधरी, चेयरमैन ने श्री सिंह व उनके दल का धन्यवाद दिया कि वह हमारी सभ्यता व संस्कृति को बचाने के लिए यह यमुना सत्याग्रह किया है। तो अब हम जैसे लोगों को भी इसमें आगे आकर कन्धे से कन्धा मिलाकर यमुना को बचाना होगा।

इसके पश्चात् सत्याग्रहीयों का दल **एकता परिषद कार्यलय वल्लभगढ़** गया। जहां एकता परिषद के कार्यकर्ताओं को भी यमुना सत्याग्रह में भाग लेने को कहा तथा वहां के कार्यकर्ताओं ने कहा कि वह इस यमुना बचाने के अभियान में जनजागरूकता करने का कार्य करेगें।

इसके प्श्चात सभी यमुना तट के किनारें, **छांयसा गांव** गये। जहां पत्रकारों को श्री सिंह ने बताया कि सत्याग्रहियों का सरकार से निम्न आग्रह है :

1. यमुना के अविरल प्रवाह को बनाये रखने के लिए यमुना से सम्बन्धित पांच राज्यों ने मिलकर यमुना प्रवाह की सहमति 12 मई 1994 बनाई थी। उसे सभी राज्य मानें और

उस निर्णय को क्रियान्वित करें। जिससे यमुना में जल नियमित छोड़ा जाए। इसके लिए सभी संबंधित राज्य सरकारों को तुरंत आवश्यक दिशा–निर्देश केन्द्र सरकार जारी करे।

2. यमुना के दोनों किनारे कंक्रीट के जंगल की बजाय प्राकृतिक जंगल लगाया जाए। इसको पंचवटी के रूप में विकसित किया जाए और ऐसे वृक्ष लगाए जाएं जिनमें जल का वाष्पीकरण ज्यादा न हो और वह अपनी जड़ों में पानी को समेट कर रख सके । जैसे–पीपल, गूलर, बरगद, कदम्ब, आंवला आदि।

3. यमुना के दोनों तरफ से आनेवाली प्राकृतिक जल धाराओं को पुनर्जीवित किया जाए। इसमें आने वाली सभी जल धाराओं पर जल शोधन संयन्त्र लगाये। कोई गांव, महानगर और उद्योग इसमें प्रदूषित जल नहीं ड़ाले इस पर तुरन्त प्रभाव से रोक लगे।

4. सामुदायिक वर्षाजल को संरक्षित करने हेतु पुराने तालाबों, बावड़ियों, झालरो और जौहड़ों को पुनर्जीवित किया जाए औरे जंगल में जहां भी संभव हो वहां नयी जल संरक्षण संरचनाओं का निर्माण किया जाए।

5. यमुना संस्कृति को पुर्नजीवित किया जाये। हमारें सत्याग्रह पर सरकार ध्यान देगी। यमुना को शुद्ध–सदानीरा हमारें जीवन का आधार बनायें रखेगी।

उन्होंने कहा कि कामन वैल्थ गेम क्यों यमुना के किनारे ही क्यों आयोजित किया जा रहा है, दिल्ली में ओर भी जगह है। शायद आपको पता नहीं कि जहां कामन वैल्थ गेम किये जा रहें है। वो जगह रेतीली है वहां कोई भी बिलडिंग ठहर नहीं सकती है। थोडा सा भूकम्प भी उसे बचा नहीं सकता है। यह वह जगह है जहां दिल्ली को सबसे ज्यादा पानी मिलता है। यह तो हमारें पानी को लूटने का एक तरीका है। पत्रकारों के सवाल का जवाब देते हुये कहा कि अगर उन्हें कामन वैल्थ गेम करना ही है तो किसी ओर जगह भी कर सकते है। अगर उन्होंने उस जगह कामन वैल्थ गेम बनवाया तो वह हमारी लाशों पर बना लें।

यहां से सत्याग्रही **विश्राम घाट मथुरा** गये। जहां मंदिर के पुजारियों के साथ एक बैठक रखी गई। मंदिर के पुजारियों ने श्री राजेन्द्र सिंह ने अपनी समस्याओं से अवगत कराते हुए बताया कि यमुना का यह घाट जिसकी अपनी एक संस्कृति है। वो नदी आज कितनी गंदी है। पहले यह नदी 12 माह बहती थी। लेकिन अब यह रूक गई है जिस कारण ये ज्यादा गंदी व मैली हो गई है। टीटमेन्ट के नाम पर सरकार हजारों करोड़ो रूपये खर्च कर रही है। लेकिन कुछ नहीं हो पा रहा है, बल्कि भ्रष्टाचार बढ़ रहा है।

श्री राजेन्द्र सिंह ने उपस्थित पुजारियों व बुद्धिजिवीयों से कहा कि आज हमारे देश में पर्याप्त पानी के बावजूद हम बेपानी हैं। अब हम सभी जल के संरक्षण की अपनी जिम्मेदारी समझें। सरकार समाज को जल की हकदारी दे तो फिर गांव–घर के सभी स्त्रोत पानीदार बन जाएगें। सरकार इसके लिए राष्ट्रीय रोजगार गारंटी अधिनियम के तहत साधन उपलब्ध कराएं। आज सरकार को पेयजल सुरक्षा का अधिनियम बनाकर अपनी जिम्मेदारी को पूरा करना चाहिए। अगर ऐसा सरकार ने नहीं किया तो समाज सरकार पर पूरा दबाव बनायेगा, तब सरकार मजबूर होकर यह काम करेगी। अच्छी सरकार जन दबाव से पूर्व ही अच्छा कार्य कर लेती है। उम्मीद है कि पेयजल संकट

के समाधान हेतु स्थाई उपाय करके भूजल पुनर्भरण का काम किया जाए। जोहड़, तालाब आदि से कब्जा हटाकर उन्हें मरम्मत कर ठीक किया जाए। जल का षोषण कम होना चाहिए। ठीक समय पर सही प्रयास से जल संकट का समाधान संभव है। सरकार इस काम में अपनी हकदारी–ईमानदारी और जिम्मेदारी पूरी करके दिखा सकती है। तब ही भारत पानीदार बनेगा।

भारत की पेयजल समस्या का समाधान करना चाहते है, तो भूजल का लेन–देन बराबर करना होगा, यदि ऐसा नही हुआ तो भूजल पेयजल की जरूरत पूरा नही कर सकता। धरती के पेट से जल निकालने से अधिक वापस धरती को देना जरूरी है। भूजल पुनर्भरण ही हमारें पेयजल संकट का स्थाई समाधान है। इसकी चिन्ता आज सरकार दिखाती तो है लेकिन उस दिशा में सही चिन्तन और काम नहीं दिख रहां है। भूजल की कमी आज के जल संकट की मूल समस्या है। धरती से जल पुनर्भरण करने वाली नदियों, नहरों, नालों, जंगलों के जल भराव क्षेत्रफल में जल दबाव की कमी आई है। इसके घटने से धरती का पेट खाली होने लगा है। तेज गति से यह गहराता ही जा रहा है। भूजल का कम होना ही बाढ़ सुखाड़ का बढ़ना भी बता रहा है। अब वर्षा का जल मिटटी, कंकर, पत्थर सब कुछ ही साथ लेकर निचले क्षेत्र में इक्ट्ठा करता है। ऊपरी क्षेत्रों में जहां अधिक वर्षा के कारण बाढ़ आती है। वहां की नमी और मिटटी का उपजाऊपन पानी के साथ बह जाता है। तत्पष्चात वहां सूखे की स्थिति आने पर सब कुछ उजड़ जाता है। अतः बाढ़–सुखाड़ एक ही सिक्के के दो पहलू है। इनका बनना भी उसी कारण से होता है। इस कारण को समझकर जहां पानी दौड़ता है। वहां उसे चलना सीखाना है, जहां चलने लगे वहां रेंगना सीखाना और जहां पानी रेंगने लगे वहां पकड़कर धरती के पेट में बैठाना चाहिए। जब जरूरत हो उसे निकालकर अपना जीवन चला लें फिर वर्षा आने पर बड़ी उदारता से उसे वापस कर दें। तभी धरती के ऊपर नमी और नीचे पानी रहेगा।

भारत को पेयजल जरूरत पूरी करने के वास्ते जनोमुन्खी विकेन्द्रित जल प्रबन्धन को अपनाना होगा। जितना जल धरती से लेते हैं, उतना ही धरती को वापस लौटाए तो फिर सरकारी पाईप से आने वाला पानी कभी नहीं सूखेगा। आज पाईप से पानी तो पहुंचता है परन्तु शीघ्र ही मूल स्त्रोत समाप्त हो जाता है। इस प्रकार खर्च के बावजूद पानी न मिलने के कारण धनराशि और पानी दोनो समाप्त हो जाते है। सरकार यदि हम सबको पेयजल देना चाहती है, तो केवल धरती से पानी लेने की तकनीक ही कारगर नही होगी बल्कि हमें धरती से जल का लेनदेन बराबर करना होगा। हमने आज तक केवल जल की लूट व प्रदूषण ही सीखा और सिखाया है। अब हम धरती से जितना पानी लेते हैं उतना ही पानी धरती को देकर ही पेयजल लेना षुरू करें।

हमारें देश में पानी का यह संकट न हो अगर हम सालभर में गिरने वाली सभी 4000 बूंदो (बी.एम.सी.) को सहेज कर रख लें। अभी 4000 बूंदों में हम केवल 600 बूंद पानी ही सहेज पाते है। शेष बरबाद ही होती है। हम अपनी सारी बूंदों को सहेज कर और समझकर उपयोग करें।

भारत देश में पेयजल का संकट जल की कमी के कारण नहीं है। बल्कि भूजल की कहीं अधिकता और कहां कमी के कारण ही है। बंगाल और असम जहां बहुत पानी

है। वहां भी जल धातुओं के कारण पानी पीने योग्य नहीं है। आर्सेनिक, फलोराईड, आयरन, नाईट्रेट व मिक्स धातुओं के कारण जल संकट है। जल उपलब्धता की दृष्टि से 55607 गांव ऐसे है जिनमें पेयजल उपलब्ध नहीं है और वे प्रदूषित जल पीकर बिमारी, बेकारी और लाचारी का जीवन जीते है। 3.31 लाख गांव ऐसे हैं जहां कम और प्रदूषित पेयजल मिलता है। इस देश में आदि से अधिक जनसंख्या अषुद्ध पानी पीने के लिए मजबूर हैं।

उन्होंने पुजारियों से कहा कि आप लोग इस यमुना को बचाने में सबसे अहम भूमिका निभा सकते है। लोगों को धर्म के आधार पर संवेदनशील बनाकर इस यमुना को सदा निर्मल नदी बना सकते है। इसलिए आप लोगों को आगे आकर, कमरकश कर कार्य करना होगा। इसके पश्चात् मंदिर के पुजारी लोगों ने राजेन्द्र सिंह को विश्राम घाट से नांव द्वारा नदी का अवलोकन करवाया। आगे जाकर देखा तो नदी काफी गंदी थी, किनारे पर ट्रीटमेन्ट प्लांट बंद पडे हुये थे, तथा नाले का पानी सीधा नदी में छोडा जा रहा था। नदी के अवलोकन करने के पश्चात सत्याग्रही दल विश्वविद्यालय के गेस्ट हाउस में रूका।

<u>दिनांक 27 जून 2007</u> <u>स्थान : मथुरा, आगरा</u>

आज सत्याग्रही प्रात 8.00 बजे **गोकुल बैराज, बी.सी.डी.** पंहुचे। जहां राजेन्द्र सिंह और उनके दल ने गोकुल बैराज बांध को देखा। वहां उपस्थित कर्मचारियों व शहरवासियों के साथ मिटींग हुई। जिसमें सर्वप्रथम श्री रमेश जी ने 'नदियां धीरे बहो'....................... गीत से मिटींग का शुभारम्भ किया तथा वहां के कर्मचारीयों ने सभी सत्याग्रहियों को दुपट्टा पहनाकर सम्मान किया।

उसके बाद श्री राजेन्द्र सिंह ने कहा कि यमुना सबकी मां है और इस मां को बचाने के लिए ही हमने यमुना सत्याग्रह किया है। अतः हम सब को तैयार होना होगा तभी हम कुछ शुरू कर सकेगें। अभी आज हमारा मन जितना चाहता है, उतना हम शुरू करें। यमुना की छाती पर चल रहे बुल्ड़ोज़र रूकवा सकते है। खाली जगह में वृक्षारोपण शुरू कर सकते है। अब यमुना में बनते मन्दिर मस्जिद, गुरूद्वारों को रोककर यमुना में पड़ते गन्दे नाले ठीक करने का काम कर सकते है। यमुना को दूर से मिलने वाले जल क्षेत्रों में जल संरचनाओं का निर्माण शुरू कर सकते है। यमुना के खाण्डवप्रस्त क्षेत्र अरावली में चैकडैम, जोहड़, तालाब बनाकर भूजल को संकट के समय हेतु सुरक्षित क्षेत्र बना सकते है। ये सारे काम दिल्ली की राजनैतिक पार्टियां ही स्वयं आज ही शुरू कर सकती है। राजनैतिक पार्टियां अब मतदाताओं को घुमाकर केवल मत लेने का काम कब तक करती रहेगी ? अब जो यमुना मां बनाने का काम करेगा, उसे ही मतदाता मत देगा। अब मतदाताओं को समझना होगा कि कौन उन्हें घुमा रहा है? कौन हमारें जीवन और हम सब की चिन्ता कर रहा है। यमुना को बिल्डर्स को सौपना, यमुना का जीवन नष्ट करना और दिल्ली वासियों का हक छीन रहा है। दिल्ली वासी अपनी जागरूकता का प्रमाण प्रस्तुत करें, और अपनी यमुना को बचाने हेतु आज ही जुटेंगे तभी कुछ हो सकता है।

मैं जो कहता हूं बहुत कठिन दिखता है। क्योंकि आज तो दिल्ली के राजनेता दिल्ली वासियों को टैंकर से पानी पिलाने में दिलचस्पी रखते है, क्योंकि टैंकर सप्लाई से उनका वोट पक्का होता है। जब राजनेताओं को पानी व पैसा और वोट मिलने लगे तो यमुना वासियों को पानीदार बनाने में किसी भी नेता की दिलचस्पी नहीं होगी। आज मत पाना भी

और मतदाताओं की जेब खाली करवाना ऊपर से उनका दाता बनना यह सभी राजनैतिक पार्टियों का एक मात्र काम बन गया है। यमुना वासियों को स्वयं तय करना है। स्वयं को पानीदार बनाने हेतु यमुना को अपने लिए बचायें, और यमुना को बचाने में जो लगें और मात्र महात्मा गांधी का नाम लेने वालो के बजाए जो महात्मा गांधी के बतायें रास्ते पर चलते रहें हैं उन्हीं को मत दें। हमें अब अपनी यमुना को बचाने के लिए संघर्ष करना होगा। जिसमें आप सभी भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते है।

इसके पश्चात् रमेश भाई ने कहा कि जो यमुना यमुन्नोतरी से निकलती है। तो कितनी स्वच्छ निर्मल होती है। लेकिन जब वह दिल्ली से होकर गुजरती है, तो नाले का रूप धारण कर लेती है। क्या यह सब हमारी आखें देखने की इच्छुक हैं? नहीं! लेकिन अब हमें कोई दिखाना चाहता है। इसलिए अब हम ऐसा ही देखने हेतु मजबूर है। नदियों को शोषक–प्रदूषक अभी तक केवल गन्दगी ढ़ोने वाली गाड़ी बना रहें थे। अब इसे नाला बनाना चाहते है। जो आज के बड़े नेता तथा कथित करना चाहतें है, वहीं होता है। लेकिन हमें यह सब उन्हें करने से रोकना है। अगर हम जैसे नागरिक ही पिछे हठ जायेगें तो इस यमुना का क्या होगा। अतः हमें इसे बचाने के लिए आगे होगा।

श्रीमति नन्दिनी जैन ने कहा कि आपके इस अच्छे कार्य में उत्तर प्रदेश सरकार भी आपके साथ है। और अब समय आ ही गया है कि हम यमुना को बचाने के लिए कुछ करें।

इस मिटींग के पश्चात् सत्याग्रहियों का दल **श्री माथुर चतुर्वेद संस्कृत महाधिद्यालय, डेम्पीयर नगर मथुरा** गया। जहां पर एक प्रेस कान्फ्रेस को सम्बोधित करते हुऐ कहा कि **यमुना सबकी मां है, उसे प्रदूषण रहित बनाया जाये।** आज अपनी पवित्र नदियों के जल का भी नीजिकरण करने का प्रयास किये जा रहें है, जबकि यमुना ही नहीं अन्य सभी नदियों में प्रकृति प्रदत्त पानी सबका प्राण है। राज–समाज और सृष्टि सभी का इन पर समान हक है। जीवन रूपी जल को किसी कम्पनी के हाथों में देना या प्रदूषित करना राष्ट्रहित में नहीं है। पतित पावनी श्री यमुना हम सबकी मां है उनको प्रदूषित करना महा पाप है। यह सब जानते हुये भी हम उसे प्रदूषित ही नहीं उसके स्वरूप को ही नष्ट करना चाहतें है। श्री सिंह ने कहा कि भू–गर्भ जल पर सब का समान अधिकार है। नदियों में प्रकृति प्रदत्त जल प्राणी मात्र का जीवन है। उस जीवन को निजी हाथों में देकर सबके साथ अन्याय ही नहीं राष्ट्रीय सम्पत्ति को क्षति पहुंचाई जा रही है। एक प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा कि जल बिरादरी यमुना के पवित्र रूप को पुनः प्रस्थापित करना चाहती है। इसके लिए वह तीसरी बार दिल्ली से आगरा, उत्तराकाशी तक तथा चौथे चरण में दिल्ली से इलाहाबाद तक की जन जागरण यात्रा करेगें।

उन्होंने कहा कि यमुना के दोनों तरफ से आने वाली प्राकृतिक जल धाराओं को पुनर्जीवित किया जायें। सभी जल धाराओं पर जल शोधन संयत्र लगाये जाये तथा कोई भी उद्योग पालिका या महानगर उसमें प्रदूषित पानी न डालें इसकी सुदृढ़ व्यवस्था की जाये। सामुदायिक वर्षा जल को संरक्षित करने के लिए पुराने तालाबों, बावडियों, झालरों और जोहड़ों को पुनर्जीवित किया जायें और जंगल में जल संरक्षण संरचनाओं की स्थापना की जाये। यमुना संस्कृति को पुनर्जीवित किया जायें। यमुना में शुद्ध सदानीय हमारें जीवन का आधार बनाया जाये। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश की कोई जल नीति नहीं है। वह बनाई जाये। भू–गर्भ जल के श्रोतों निजीकरण करना बड़ा अपराध है। उन्होने कहा कि नील नारी पंचायतें बनाकर भू–गर्भ जल की सुरक्षा की व्यवस्था की जाये। उन्होंने कहा कि अभी तक सात हजार करोड़ रूपया यमुना एक्शन प्लान पर खर्च हो जाने के बाद भी यमुना का प्रदूषण निरंतर बढ़ता जा रहा है। यह चिंतनीय है।

माथुर चतुर्वेदी परिषद के अध्यक्ष नवीन नागर नें सत्याग्रहियों का स्वागत किया और कहा कि वह भी जल बिरादरी के साथ है तथा यमुना बचाने को लेकर वह यहां जन जागरूकता का काम करेगें जिससे लोगो को यमुना के बारे में पता हो सके कि यह कितनी प्रदूषित हो चुकी है। उन्होंने इस सत्याग्रह में सभी की भागीदारी होने की वकालत की।

इसके उपरान्त राजेन्द्र सिंह और उनका दल **जिला युवा समन्वयक, नेहरू युवा केन्द्र कार्यालय मथुरा** पहुंचा। जहां मिटींग व प्रेस कान्फ्रेंस रखी गई थी। नेहरू युवा केन्द्र कार्यकर्ताओं ने सभी सत्याग्रहियों को माला पहनाकर स्वागत किया। पत्रकारों को सम्बोधित करते हुये श्री राजेन्द्र सिंह ने कहा कि यमुना और गंगा नदी संकट में है। दोआब क्षेत्र की पेयजल व्यवस्था इन दोनों नदियों पर टिकी है। विदेशी कम्पनियां विरासत को हड़पना चाहती है। इसकी शुरूआत देश की राजधानी से हो चुकी है। उन्होंने कहा कि कोकाकोला और पेप्सी जैसी विदेशी पेय पदार्थ कंपनियों को ज्यादा पानी की जरूरत है। सबसे ज्यादा खतरा विश्व बैंक से है। सौंदर्यीकरण और कामन वैल्थ गेम जैसे कार्यक्रम की आड़ में भारत के सबसे अधिक जलधारण करने वाले गंगा–यमुना के बीच के क्षेत्र दोआब पर कब्जा करने की चाल चली जा रही है। उन्होंने कहा कि जल नीति में पानी का मालिकाना हक दिए जाने की घोषणा हो चुकी है। अब इसके कियान्वय का दौर शुरू हो रहा है। उस नीति को कार्य रूप दिया जा रहा है। उन्होंने केन्द्र और राज्य सरकारों को आगाह किया है कि पानी पर सभी का साझा हक है। सरकार जल नीति तय कर पानी के निजीकरण को रोकने का कार्य करें। श्री सिंह ने चेतवानी दी कि सरकार ने पानी का निजीकरण नहीं रोका तो इसके भंयकर परिणाम होंगे। यमुना को बचाने के लिए ही हमने यमुना सत्याग्रह कार्यक्रम शुरू किया है।

रमेश भाई ने पत्रकारों को सम्बोधित करते हुये कहा कि यमुना सत्याग्रह यात्रा के अन्तर्गत पहला चरण कार्यक्रम यमुनोत्री से हथनीकुंड़, दुसरा चरण हथनी कुंड़ से दिल्ली और तीसरे चरण का कार्यक्रम दिल्ली से आगरा, उत्तराकाशी तक चलाया जा रहा है। इसमें यमुना के पूर्वी और पश्चिमी किनारों की स्थिति का जायजा लिया गया। उन्होंने यमुनापुत्रों को मिलकर यमुना को संकट से बचाने के लिए कार्य करने को भी कहा।

भूजल को लेकर किए गए सवाल के जवाब में श्री सिंह ने कहा कि भू–गर्भ जल का सदुपयोग करने के लिए एक मॉडल बिल बनाकर सरकार को भेज दिया गया है। उन्होंने कहा कि इसमें भी भ्रष्टाचार में संलिप्त रहनें वालों ने अपनी जेब गरम करने का रास्ता निकाल लिया है। भूजल के प्रयोग के लिए लाइसेंस दिए जाने की बात कही जा रही है। उनसें पूछा गया कि भू जल का प्रयोग करने के लिए किसान कहां से लाइसेंस लाएगा ? इसके जवाब में उन्होंने कहा कि लाइसेंस देने वाले ही किसान की कमर तोड़ कर रख देंगे। इसके लिए सरकार को चाहिए वह ब्लाक स्तर पर नियमित प्रयोग के लिए संसाधन उपलब्ध कराएं। उन्होंने नील नारी पंचायत का गठन करने की वकालत की।

यहां से सत्याग्रही दल **महिला शांति सेना आगरा** पहुचां। जहां महिला शांति सेना की सदस्यों व पत्रकारों के साथ बैठक हुई। शांति सेना की कार्यकर्ताओं ने श्री सिंह व साथ में आये सत्याग्रहियों का स्वागत किया। इसके पश्चात् पत्रकारों को सम्बोधित करते हुये कहा कि यमुना नदी की हालत अत्यन्त दयनीय है। प्रदूषण और जल न्यूनता इस समय सबसे बड़ी चुनौतियां है। जिन्हें अभियान के तौर पर स्वीकार कर नदी को स्वच्छ जल युक्त फिर से बनाना है। बदहाली से सिसकती यमुना के आंसू पोछनें है। उन्होंने कहा कि जब से भारत ने विदेशी कंपनियों के लिए अपने दरवाजे खोले हैं, तब से इसी जल संपदा का दोहन और संरक्षण करने के नाम बहुराष्ट्रीय कंपनियां खर्चीली और भारतीय परिवेश के सर्वथा

प्रतिकूल टैक्नोलॉजी सरकार पर थोप रही है। उन्होंने कहा कि देश में इस समय यमुना नदी सबसे ज्यादा समस्या ग्रस्त है। अब इसी को निर्मल जल के प्रवाह युक्त बनाने का लक्ष्य कर वे सक्रिय है। यमुना बिरादरी को जाग्रत करने के लिए उनका चार चरण अभियान है। तीसरा चरण दिल्ली से आगरा, उत्तराकाशी के बीच का है।

महिला संगठन की अध्यक्ष डा. मनोरमा शर्मा ने संगठन की उनके उददेश्यों के साथ एकजुटता व्यक्त की। इस कार्यक्रम में सुश्री प्रेमा पाटनी, डा. शेलबाला अग्रवाल, नीलिमा पाटनी तथा डा. शशि गोयल ने इस यमुना सत्याग्रह में अपने संगठन की महत्वपूर्ण भूमिका बताई तथा कहा कि उनका संगठन यमुना सत्याग्रह पूरे जोश के साथ भाग लेगा, तथा यमुना को बचाने के लिए काम करेगा।

इसके पश्चात् सभी सत्याग्रही **मुकेश जैन के निवास स्थल** पर गये जहां राजेन्द्र सिंह ने उन्हें *''प्यार का रिश्ता''* फिल्म दिखाई जिसमें पूरे देश में चल रहें पानी के मुददें है। उन्होंने उपस्थित लोगों को कहा कि अब जरूरत आ गई है कि आप सभी भी यमुना को बचाने के लिए आगे आयें क्योंकि आगरा ही ऐसा क्षेत्र है। जहां यमुना सबसे ज्यादा गंदी व मैली है। अतः आप सभी को इसे बचाने को लेकर जोर–शोर से कार्य शुरू करना होगा।

<u>दिनांकः 28 जून 2007</u> <u>स्थान : आगरा</u>

आज सुबह राजेन्द्र सिंह जी व उनका दल मुकेश जैन जी के साथ **भैरोव नाला** देखने गये जहां नाले के पानी को शुद्ध करने के लिए शुद्धीकरण यंत्र लगाया गया है। लेकिन यह यंत्र देखने पर मालूम पड़ा कि यह यंत्र तो बंद पड़ा हुआ है। तथा जो नाले का पानी है वो सीधा नदी में जा रहा है। यमुना के इस घाट को देखकर कोई भी यह नहीं कह सकता है, कि यह हमारी यमुना मां है। यह तो एक नाले का रूप ले चूकी है। जिस शुद्धीकरण यंत्र जिसमें जापान की टेक्नोलोजी लगी हुई है और जिसमें करोड़ों रूपयें खर्च हुये है। वो बंद पडा हुआ है तथा नाले का पानी जिसमें आगरा की गंदगी नदी में जा रही है। यहां पर एरिना सैलिना, विनोद कुमार व प्रभुलाल सालवी ने नदी की विडीयों ग्राफी व फोटोग्राफी की। जिसे देखकर शायद किसी को अच्छा ना लगा इसलिए उसने सत्याग्रहियों के वाहन जो शुद्धीकरण यंत्र के बाहर खड़ा हुआ था। उस पर पत्थर मारकर गाड़ी का शीशा तोड़ दिया।

भैरोव नाला देखने के पश्चात् सभी **हाथी घाट** गये जो अपने आप में ऐतिहासिक जगह है। यहां पर पहले महिलाओं के नहाने व कपडे धोने का स्थल था। लेकिन अब यह जगह तो जानवरों के नहाने के योग्य भी नहीं है। इसमें तो पूरे आगरा का प्रदूषण है।

यहां से सत्याग्रहियों का दल **एन.वी.सी.सी., 78 एम.एल.डी., शुद्धीकरण प्लांट, धांधुपुरा** गये जहां राजेन्द्र सिंह ने पूरे प्लांट का अवलोकन किया। वहां के कर्मचारियों ने बताया कि किस तरह से ये यंत्र कार्य करता है। राजेन्द्र सिंह जी ने उनसे पूछा की ये प्लांट बंद क्यों है ? तो इसके जवाब में वहां कर्मचारी ने कहा कि अभी बिजली नहीं आ रही है। इसलिए यह बंद है। वरना तो यह प्लांट 24 घंटे चलता है। पूरे प्लांट का अवलोकन करने के पश्चात् जब प्लांट के बाहर खड़े लोगो से बातचीत की गई तो मालूम पड़ा की यह तो पूरे दिन में सिर्फ 3–4 घंटे चलता है। जिस शुद्धीकरण प्लांट पर सरकार करोड़ो रूप्यें खर्च कर रही है। वो इस तरह चल रहें है।

दोपहर में **परल्यूड पब्लिक स्कूल आगरा** में प्रेस कान्फ्रेंस हुई। पत्रकारों को सम्बोधित करते हुये श्री सिंह ने कहा कि गंगा–यमुना का दोआब भूजल का सबसे बड़ा भंडार है। पानी

के व्यापार से जुड़े लोगों की वर्षों से इस पर निगाह है। सरकार की जल नीति भी उनके पक्ष में हैं। उन व्यापारियों के हितों को साधने के लिए योजनाबद्ध तरीके से नदियों पर कहर ढाया जा रहा है। इसी की शिकार यमुना नदी भी है। हमें वास्तविकता समझनी होगी। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक संपदा और समाज में साझा रिश्ता होता है। जितना लोग, उतना देना होगा, तभी बैलेंस बनेगा। इस रिश्ते पर किसी सरकार का हक नहीं हो सकता। राष्ट्रीय जल नीति की आलोचना करते हुये बताया कि नीति के अनुसार पानी के भंडार पर प्राइवेट व्यक्ति का कब्जा हो सकता है। इस माध्यम से मल्टीनेशनल कंपनी की ख्वाहिश पूरी की जा रही है। कांमन वैल्थ गेम क्यों यमुना के किनारे आयोजित किया जा रहा है? दिल्ली में ओर भी जगह है ? यमुना को नाले में तब्दील करने की योजना काम कर रही है। हमें समस्या की तह में जाना होगा। पानी के लुटेरों और प्रदूषकों को पहचानना और रोकना होगा।

पत्रकारों के सावलों को जवाब देते हुये मैग्सेसे पुरूस्कार से सम्मानित जल पुरूष राजेन्द्र सिंह जी ने कहा कि वह यमुना के किनारे के समाज में मित्र की तलाश में निकले हैं। लड़ाई इसके बाद शुरू होगी। राजस्थान जहां साल की वर्षा 200 मिलीमीटर है, वहां के सूखे क्षेत्र आज पानीदार हैं, आगरा में 1600 मिलीमीटर वार्षिक वर्षा होती, यहां तो पानी की समस्या होनी ही नहीं चाहिए। यू.पी., हिमाचल, राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा और उत्तराखंड़ यमुना के छह बेटे हैं, जिन्हें यमुना को इज्जत वापस लानी होगी। इसे यमुना का समाज ही पूरा करेगा। यमुना अभियान की बावत उन्होंने बताया कि पांच राज्य सरकारों को उन्होंने पत्र लिखकर कर यह मांग की है कि यमुना को उसका पानी दिया जाए, जैसा कि राज्यों ने सन् 1994 में समझौता किया था। यमुना किनारे कंक्रीट के जंगल के बजाय प्राकृतिक जंगल लगाया जाए, इसमें पीपल, गूलर, बरगद, कदम्ब, आंवला के पेड़ लगाए जाएं, जिनसे जल का काम वाष्पीकरण होता है। यमुना के दोनों तरफ आने वाली प्राकृतिक जल धराओं को पुनर्जीवित किया जाए, जल शोधन संयंत्र लगाया जाए। इसी प्रकार सामुदायिक वर्षा जल को संरक्षित करने हेतु तालाबों, बावडियों, झालरों और जोहडों को पुनर्जीवित किया जाए। यमुना संस्कृति को पुनर्जीवित किया जाए।

उन्होंने पत्रकारों से कहा कि यमुना को बचाने में आप लोग महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते है। क्योंकि गांधी जी भी पहले पत्रकार थे, और एक पत्रकार समाज में एक ज्योति जला सकता है। समाज के लोगों को प्रदूषित यमुना के बारे में बताकर जागरूक कर सकता है, तथा उनकी संवेदनाऐं प्राप्त कर सकता है। अगर आगरा का समाज जागरूक हो जाये तो यह यमुना को प्रदूषण मुक्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

शाम को 4 बजे **आगरा नगर निगम** में पार्षदों व समाज के बुद्धिजीवियों के साथ संगोष्ठी रखी गई। यहां पर श्री राजेन्द्र सिंह ने अपने 25 वर्षों के अनुभवों को प्रजेन्टेशन के माध्यम से बांटा।

उन्होंने पार्षदों से कहा कि आगरा को स्वच्छ व सुन्दर बनाने में अहम् भूमिका निभा सकते है, क्योंकि आप ही वह शक्ति है। जो यमुना व आगरा को प्रदूषण मुक्त करा सकती है।

उन्होनें कहा कि मैंने 15 मई की सुबह एक अंगेजी अखबार में पढ़ा कि मैं यमुना बचाने के लिए दिल्ली में दो महीने से डेरा डाले हूं। इस अखबार ने जो शब्द प्रयोग किया है वह है 'रेस्क्यू ऑपरेशन'। मानों जंगल में आग लगी है और 'वाटरमैन' पानी लेकर आ पहुंचा है। मुझे यह सब थोड़ा अटपटा लगता हैं। मैं खुद में इतना सामर्थ्यवान कभी नहीं हो सकता कि इस तथाकथित 'आपदा राहत' में अकेले कुछ करूं और सफल हो जाऊं। मेरी समस्त क्षमताओं का स्त्रोत समाज में हैं। असली सामर्थ्य तो समाज में है, जिसने मुझे थोड़ा उपयोग

करने का मौका देकर कृतार्थ कर दिया है। मैं दिल्ली में हूं, और यमुना के सवाल को लेकर ही हूं, लेकिन यह कोई राजेन्द्र सिंह का आपदा प्रबंधन नहीं है। यह समाज की वर्तमान जरूरत है। यमुना पर आपदा आयी है। इससे कोई इन्कार नहीं कर सकता लेकिन प्रबंधन सब समाज को, हमको, आपको मिलकर करना होगा। आप सबसे मेरी अपील है, कि अपने–अपने स्तर पर जो कर सकते हैं करें मैं आपके साथ हूं। एक वादा मैं जरूर करता हूं, कि मैं इसे बुझने नही दूंगा। लेकिन मेरे अकेले से क्या हो सकता है? यमुना के बारे में पांच मुख्य मांगें हमने रखी है। जो इस प्रकार है।

हमारी प्रमुख मांग

1. यमुना के दोनों किनारे 10 हजार हेक्टेयर में कंक्रीट के जंगल की बजाय प्राकृतिक जंगल लगाया जाए। इसको पंचवटी के रूप में विकसित किया जाए और ऐसे वृक्ष लगाए जाएं जिनमें जल का वाष्पीकरण ज्यादा न हो और वह अपनी जड़ों में पानी को समेट कर रख सके । जैसे– पीपल, गुलर, बरगद, कदम, आंवला आदि।

2. यमुना के दोनो तरफ से आनेवाली प्राकृतिक जल धाराओं को पुनर्जीवित किया जाए। इसमें पश्चिम दिशा से ज्यादा जल धाराएं आती थी। इनमें से एक राजस्थान के गुढ़ा–झांकड़ीया गांव से चलकर हरियाणा होते हुए नरायणा, नजफगढ़ होती हुई वज़ीराबाद के पास आकर मिलती थी। इस नदी का नाम है– साबी। यह साबी नदी यमुना को सालभर जल पिलाती थी, लेकिन दुर्भाग्य से आज यह एक नाले में बदल गयी है। बाढ़ के समय यह यमुना के बाढ़ के पानी से नरायणा झील को भरती थी और बाद में बाढ़ उतर जाने पर यह उसी पानी को यमुना में पुनः उड़ेल देती थी। इसके कारण यमुना का अविरल प्रवाह बना रहता थ। इसलिए साबी और अन्य छोटी –बड़ी जल धाराओं को पुनर्जिवित किया जाए।

3. दिल्ली क्षेत्र में सामुदायिक वर्षाजल को संरक्षित करने हेतु पुराने तालाबों, बावड़ियों, झालरो और जौहड़ों को पुनर्जिवित किया जाए और दिल्ली रिज के जंगल में जहां भी संभव हो वहां नयी जल संरक्षण संरचनाओं का निर्माण किया जाए तथा दिल्ली के अरावली के भूजल को संरक्षित, सुरक्षित क्षेत्र घोषित किया जाए। ऐसी संरचनाओं से अलवर की मशहूर अरवरी नदी की तरह यमुना भी पुनर्जिवित हो जाएगी और इसे अविरल बहाव के लिए अन्य जल स्रोतों पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा।

4. दिल्ली के पर्यटन, सभ्यता और संस्कृति के मूल केन्द्र के रूप में यमुना स्थित है। लेकिन इसके साथ हमारा रिस्ता धीरे–धीरे खत्म हो गया है। यमुना से हमारा संबंध केवल इतना रह गया है, कि इसके उपर बने भारी भरकम पुलों पर गुजरते हुए एक बार हम खिड़की से झांककर गंदे पानी को देखते हैं और पुनः अपनी दुनिया में लौट आते है। यमुना के किनारों पर पहले से स्थित घाटों को पुनर्जिवित किया जाए। जल और जंगल को केन्द्र में रखकर ही पर्यटन की संभवनाएं विकसित की जाए।

5. यमुना के अविरल प्रवाह को बनाये रखने के लिए यमुना से सम्बन्धित पांच राज्यों ने मिलकर यमुना प्रवाह की सहमति बनाई थी। उसे सभी राज्य मानें और उस निर्णय

को क्रियान्वित करें। जिससे यमुना में जल नियमित छोड़ा जाए। इसके लिए सभी संबंधित राज्य सरकारों को तुरंत आवश्यक दिशा–निर्देश केन्द्र सरकार जारी करे।

श्री राजेन्द्र सिंह जी की बातों से प्रभावित होकर सभी पार्षदों ने कहा कि वह भी एक दिन श्रमदान के रूप कार्य करेंगे तथा तालाब बनायेगें लेकिन हमारें इस कार्य में आप भी शामिल हों। इसकी हम आशा करते है। राजेन्द्र सिंह जी ने उन्हें आने का आश्वासन दिया कि आप लोग इतना अच्छा कार्य करना चाहते है तो मैं जरूर आऊंगा। आगरा की मेयर ने श्री राजेन्द्र सिंह जी व उनके साथियों को धन्यवाद दिया कि उन्होंने आगरा नगर निगम में आकर पार्षदों व हमें अपने 25 वर्षों के अनुभव हमारें साथ बांटे इसके लिए हम उनका धन्यवाद करतें है तथा हम भी उनके यमुना सत्याग्रह में साथ है।

<u>दिनांकः 29 जून 2007</u> <u>स्थानः मसूरी, लैन्ड़ोर, चम्बा, बरकोट, थत्यूड़, मातली</u>

आज 10 बजे श्री राजेन्द्र सिंह ने **लाल बहादुर शास्त्री अकादमी, मसूरी** में आई. ए. एस. प्रोफेशनल ट्रेनिंग में आई. ए. एस. ऑफिसर फेस 2 के प्रशिणनार्थियों को अपने 25 वर्षों के अनुभवों को प्रजेन्टेशन के माध्यम से बाटा तथा कहा कि हमारा जो ग्रामिण ज्ञान था वो सभी समस्याओं से निपटने के लिए कारगर था लेकिन जब से हम इस आधुनिक ज्ञान के पिछे दौड़ रहें है। तो हम देख रहें है कि प्राकृतिक इनबैलेन्स देखने को मिल रहा हैं अतः हम लोगो को अपने ग्रामिण ज्ञान को बचा के रखना है तथा सभी कार्यो में उसका उपयोग करना है।

श्री राजेन्द्र सिंह ने उनके द्वारा चलाये जा रहें यमुना सत्याग्रह के बारें मे भी बताया कि यमुना बचाने को लेकर हम सत्याग्रह कर रहें है तथा उन्होंने प्रशिणनार्थियों से अनुरोध किया कि आप अपनी मां गंगा, यमुना, सरस्वती को प्रदूषण मुक्त बनाने के लिए कुछ कर सकते है।

इसके पश्चात सत्याग्रहियों का दल **मसूरी, लैन्ड़ोर, लीटरी, धनौल्टी, बटवालधार, रायपुर, थत्यूड़, काणाताल, चम्बा, बरकोट, ग्रामकोट, डुन्डा तथा मातली** जैसे गांव शहरों में गये। जहां लोगों से जनसम्पर्क व बैठके आयोजित कर उन्हें यमुना की वास्तविक स्थिति से अवगत कराया गया तथा उन्होंने जल बिरादरी द्वारा चलाये जा रहें यमुना सत्याग्रह के बारे में बताया गया।

<u>दिनांकः 30 जून 2007</u> <u>स्थानः मातली, उत्तराकाशी, मनेरी, भटवाडी, पाला</u>

आज सुबह हिमालय पर्यावरण शिक्षा संस्थान के श्री सुरेश भाई, श्री राजेन्द्र सिंह व सत्याग्रहियों का दल **उत्तराकाशी, मनेरी, कोटा भटवाडी, पाला,** आदि जगहों पर सरकार द्वारा चलाई जा रही लघु जल विद्युत परियोजना का अवलोकन करने गई। उन्होंने वहां देखा कि पहले जहां गंगा अपने रास्ते जाती थी। अब उसे टर्मिनल के माध्यम से चलाया जायेगा। अभी उत्तराकाशी में छोटी बडी छः परियोजनाएं चल रही है। जिसमें गंगा को हिमालय में सुरंग बनाकर विद्युत हेतु उपयोग लिया जा रहा है।

श्री राजेन्द्र सिंह ने भटवाडी में रूककर इस परियोजना को समझने की कोशिश की तथा उनके साथ आये सदस्यगणों ने इस परियोजना की विडीयोग्राफी व फोटोग्राफी करनी चाही तो वहां के उपस्थित गार्ड ने उन्हें रोक दिया और कहा कि यहां फोटो खीचना मना

है। तो इसके जवाब में श्री सिंह ने कहा कि जाओं उस कानून को दिखाओ, जिस कानून में फोटो खीचना मना है। गंगा मां सिर्फ तुम्हारी नहीं है यह सबकी मां है। उन्होंने इस परियोजना का विरोध भी किया कि यह परियोजना उत्तराकाशी के लिए सही नहीं है क्योंकि यहां पहाड़ों की उम्र अभी कम है। अगर इनको थोडा भी छेडा गया तो यह प्रलय ला देगें।

पर्यावरणविद् श्री राजेन्द्र सिंह जी ने हिमालय भागीरथी आश्रम मातली में हो रहें '**जल सम्मेलन**' में कहा कि पहाड़ की जवानी व पानी पहाड़ के काम आये ऐसी भावनात्मक लड़ाई लड़ के उत्तराखण्ड़ राज्य की कल्पना की थी। हालांकि राज्य प्राप्त हो गया है, परन्तु पहाड़ के जनमुददे आज भी अनसुलझे रह जाते है। जो मानव समाज में सबसे बडी दुखद घटना कही जा सकती है।

हिमालय पर्यावरण शिक्षा संस्थान, उत्तराखण्ड़ जल बिरादरी के तत्वाधान में आयोजित जल सम्मेलन में राजेन्द्र सिंह जी ने उत्तराखण्ड़ में बन रहीं जल विद्युत परियोजनाओं पर निशाना साधा है। और कहा कि राज्य में बन रही जल विद्युत परियोजनाऐं एकदम जन विरोधी है। उन्होंने यहां तक कहा कि सन् 1992 में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पानी के व्यापार के लिये नीतिगत मामलों पर जदोजहद चल रही है। जिससे देश और राज्य को मजबूरन जलनीति बनाकर पानी के व्यापार के लिए दरवाजे खुले रखने होंगे। उन्होंने राष्ट्रीय जलनीति की धारा 13 को सीरे से नकारते हुये कहा कि यह जलनीति मात्र पानी के व्यापार के लिये बनायी गयी है। जिससे आम जन की आजीविका संकट में पड़ने वाली हैं। व्यवहारीय पक्ष यह हैं कि पानी के बिना जीवन अधूरा हैं और देश की संस्कृति और सभ्यता में पानी जीवन का अभिन्न अंग माना गया है। आज की भौतिकवादी व्यवस्था जो प्राकृतिक संसाधनों के साथ क्रूर व्यवहार कर रहीं है। वह भविष्य में बड़े जनहानि का सबब बनेगी। उन्होंने जल सम्मेलन में लोगों को आगाह किया कि वे उत्तराखण्ड़ हिमालय की शोभा एंव सुन्दरता यथावत् बनी हुई रहें। उल्लेखनीय यह है कि भागीरथी घाटी में चल रहें जन आन्दोलनों को राजेन्द्र सिंह जी के पधारनें पर एक उर्जा प्राप्त हुई और लोगों ने उन्हें वर्तमान में हो रही समस्याओं से अवगत करवाया है। कहा कि निर्माणधीन परियोजनाऐं लोगों को मुगालता में रख रही है।

इस अवसर पर उत्राखण्ड़ जल बिरादरी के प्रदेश संयोजक श्री सुरेश भाई ने उत्तराखण्ड़ में बन रही जल विद्युत परियोजनाओं पर प्रकाश डाला और कहा कि तमाम जलविद्युत परियोजनाऐं लोक सुनवाई तक करने में परहेज करती है। जिससे लोगों को इन परियोजनाओं के बारे में कोई जानकारी नहीं होती हैं। यदि लोग अपने अधिकारों के प्रति आवाज उठाते हैं, तो उन्हें जबरन प्रताड़ित किया जाता है। जल सम्मेलन में आये तमाम प्रतिनिधियों को कहा कि अब वक्त सोने का नहीं हैं अपितु कंधा से कंधा मिलाने का वक्त है। इस प्रकार यह लड़ाई जारी रहेगी, जब तक जल विद्युत परियोजनाओं में लोगों की आजीविका सुरक्षित न हो, साथ ही प्राकृतिक संसाधनों पर हो रहे अनियोजित विकास पर प्रतिबंध न लगे। उन्होंने कहा कि उत्तराखण्ड़ में लोगों द्वारा बनाई गई जलनीति को सरकार स्वीकार करे, इसलिए राज्य भर में निरन्तर कार्यक्रम चलते रहेगें। जल संस्कृति मंच के संयोजक प्रेम पंचोली ने कहा कि जिस तरह लोक जलनीति को बनाने में उत्तराखण्ड़ भर में नुक्कड़ सभाओं तथा बैठकों का दौर चला उसी प्रकार जलविद्युत परियोजनाओं की खामियों को जन–जन तक पहुंचाने के लिए मंच अब पुनः नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से लोगों तक पहुंचेगा। मंच का नाटक ''नाटक क्या नदी बिकी'' में ऐसे भावनात्मक रिश्ते का प्रदर्शन करता हैं, कि जहां पानी, पेड़ और मनुष्य का आपसी सामंजस्य हैं और परिस्थिति में प्रकृति और संस्कृति भी बचती हैं, तो कौन भला जो प्राकृतिक संसाधनों के बिना जीवित रहता है।

वर्तमान की परिस्थिति में प्रकृति और संस्कृति भी बचती हैं, तो कौन भला जो प्राकृतिक मंच अब उत्तराखण्ड़ राज्य नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से करेगा। इस अवसर पर सर्वोदयी कार्यकर्ता सुरेन्द्र दत्त भट्ट, हर्षिल की प्रधान बंसती नेगी, रामप्यारी, प्रेमा बाधिनी, हिमालय पर्यावरण शिक्षा संस्थान की हिमला देवी, रक्षा सूत्र आन्दोलन की सुमति नौटियाल, संगीता मियां तथा जल संस्कृति मंच के मनमोद रावत आदि लोगों ने भाग लिया।

शाम को सत्याग्रही व हिमालय प्र्यावरण शिक्षा संस्थान के कार्यकर्ता वरूणावत पहाड़ देखने गये जहां उत्तराकाशी सरकार 250 रूपये खर्च कर भूस्कलन को रोकने के लिए इसका ट्रीटमेन्ट कर रही है।

नगर के लिए नासूर बने वरूणावत को को कंक्रीट के पहाड़ में तब्दील किए जाने पर चिंता जताते हुऐ श्री सिंह ने अध्ययन दल के साथ शीर्ष पर जाकर स्थिति का जायजा लिया। उन्होंने इसे भविष्य के लिए खतरा बताते हुए प्रकृति के अनुरूप वृक्षारोपण करने की सलाह दी।

दिनांकः 1 जुलाई 2007 स्थानः मातली सलम्यारा, नौगांव, यमुनोत्तरी, पुरोडी, विकास नगर,

आज सुबह सत्याग्रहियों का दल दिल्ली प्रस्थान करने हेतु मातली से निकला रास्ते मे पड़ने वाले मातली, सलम्यारा, नौगांव, यमुनोत्तरी, पुरोड़ी, विकास नगर में छोटी–2 बैठकें कर उन्हें यमुना सत्याग्रह के बारें मे बताया तथा उन्होंन कहा कि उनके यहां इतनी सुन्दर यमुना दिल्ली, आगरा पहुंचकर बहुत नाले का रूप धारण कर लेती है। इसलिए आप लोगों को इस सत्याग्रह में भाग लेकर यमुना को बचाना होगा।

इस तरह तीसरे चरण की यमुना सत्याग्रह समाप्त हुई।